एम्स ऋषिकेश में पारिवारिक चिकित्सा एवं प्राथमिक देखभाल पर 6वें राष्ट्रीय सम्मेलन में मा0 राज्यपाल महोदय का अभिभाषण

(दिनांक 29 सितम्बर, 2024)

जय हिन्द!

''पारिवारिक चिकित्सा एवं प्राथमिक देखभाल'' पर छठवें राष्ट्रीय सम्मेलन में स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े समाज के एक महत्वपूर्ण वर्ग के बीच आकार मैं प्रसन्नता की अनुभूति कर रहा हूँ।

आज इस अवसर पर लॉन्च पुस्तक 'जीवन में परिवर्तन– एकीकृत सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा' को साकार रूप प्रदान करने के लिए मैं एम्स की पूरी टीम को बधाई देता हूँ।

साथियों,

स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क ही हमें हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने, सपनों को साकार करने और समाज में अपना योगदान देने में सक्षम बनाते हैं। इसलिए कहा गया है, 'स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है।' बिना अच्छे स्वास्थ्य के, हमारी सारी उपलब्धियां और संपत्ति निरर्थक हो जाती हैं।

स्वास्थ्य, हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और अनमोल उपहार है, जिसकी महत्ता को अक्सर हम तब तक नहीं समझते जब तक इसे खो नहीं देते। स्वास्थ्य न केवल

हमारे शरीर की शक्ति और स्फूर्ति का प्रतीक है, बल्कि यह हमारे मानसिक और भावनात्मक संतुलन का आधार भी है। स्वास्थ्य का महत्व केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक स्वस्थ समाज और समृद्ध राष्ट्र की नींव भी है। आज के आधुनिक जीवन की चुनौतियों, और तेजी से बढ़ते तनाव के बीच, यह और भी आवश्यक हो गया है कि हम अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग और जागरूक रहें।

साथियों,

भारतीय समाज में सदियों से चिकित्सक की एक अग्रणी भूमिका रही है एक स्वस्थ एवं जागरूक समाज से ही हम स्वस्थ राष्ट्र की परिकल्पना कर सकते हैं अर्थात चिकित्सक की भूमिका व्यक्ति विशेष के स्वास्थ्य के साथ–साथ समाज के स्वास्थ्य की भी है।

'परिवार' समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई है और परिवार का एक अभिन्न भाग होता है चिकित्सक। इसलिए फैमिली मेडिसिन भारत में कोई नया सिद्धांत नहीं है, फैमिली डॉक्टर तो हमारे पुराने सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था का एक हिस्सा था। आज के समय में विशेषज्ञ चिकित्सक की अपनी एक अलग भूमिका है, लेकिन यदि दिल और मन की बात कहनी हो तो हम फैमिली डॉक्टर को ही बताते हैं।

मेरा मानना है कि 'पारिवारिक चिकित्सा एवं प्राथमिक देखभाल' स्वास्थ्य सेवाओं की आधारशिला है। पारिवारिक चिकित्सक परिवार के सभी सदस्यों की स्वास्थ्य स्थिति को समझकर बेहतर इलाज प्रदान कर सकते हैं। पारिवारिक

चिकित्सा केवल रोग के इलाज तक सीमित नहीं होती, बल्कि स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने और रोकथाम पर भी ध्यान देती है।

साथियों,

आज के इस तनाव एवं भागदौड़ भरी जिंदगी में जिस तरह डायबिटीज, हाइपरटेंशन, कैंसर, स्ट्रॉक जैसी बीमारियां अपने प्रकोप से हर परिवार को अपना शिकार बना रही है। 18–50 साल के युवाओं में भी 12.1 प्रतिशत तक हाईपर टैंशन के आंकड़े देखने को मिल रहे हैं जोकि चिंता का विषय है। तमाम आंकड़ों के अनुसार 7.5 से 8 प्रतिशत लोगों में डायबिटीज एवं 25 प्रतिशत से अधिक हाइपरटेंशन होने की आशंका है।

इन बढ़ती हुई बीमारियों के दौर में इलाज की आवश्यकता कम, बचाव एवं काउंसिलिंग की जरुरत ज्यादा है। कोई भी परिवार या व्यक्ति अपने खान–पान, तनाव, घरेलू हिंसा, परेशानी, व्यक्तिगत परेशानियों को किसको बताए या किसको समझाए? ऐसे में आवश्यकता है एक फैमिली डॉक्टर की जोकि किसी भी व्यक्ति के मर्म को समझ सके।

हम सभी एक अंग्रेजी सूक्ति से भलीभांति परिचित हैं वह है "Prevention is Better than Cure" अर्थात् इलाज से बचाव ही अच्छा है। अगर चिकित्सक कम्युनिटी में जाकर समाज और परिवार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलें तथा परिवार एवं समाज के साथ मैत्रीभाव में संबंध स्थापित करें

तो शायद बीमारियां अपना खतरनाक रूप ले ही नहीं पाएंगी और बीमारी बढ़ने से पहले ही ठीक हो जाएगी।

आज भी बहुत सारे मरीज कभी–कभी संतुष्ट होते हुए दिखायी नहीं देते शायद उनका मर्म या उनके मन की बात को समझने वाले डॉक्टर काफी कम हैं। इसलिए फैमिली मेडिसिन और प्राइमरी केयर चिकित्सकों की अत्यंत आवश्यकता है।

युवा चिकित्सकों को मेडिकल साइंस की कठिन भाषा के साथ–साथ 'फैमिली वेलनेस एवं हॉलिस्टिक हैल्थ' का भी ध्यान देना चाहिए क्योंकि जब तक फैमिली और सोशल स्ट्रकचर को नहीं समझा जाएगा तब तक मरीजों का संपूर्ण इलाज नहीं हो सकता। चिकित्सकों को मर्ज के साथ–साथ मरीज को भी ठीक करना है। इसलिए कहते हैं "Person Centric Care", मरीज अगर खुश होगा, तनाव मुक्त रहेगा, संतुष्ट होगा तो बीमारी में प्रकोप कम होगा।

यह चिंता का विषय है कि आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी के कारण लोग गंभीर अवस्था में ही चिकित्सकों के पास जाते हैं। प्राथमिक देखभाल को मजबूत करने से विशेषकर ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ेगी। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि सभी नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं मिलें।

साथियों,

केंद्र सरकार प्रत्येक नागरिक के लिए सुलभ, सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का कहना है कि ''भारत का लक्ष्य न केवल अपने नागरिकों के लिए बल्कि पूरे विश्व के लिए स्वास्थ्य सेवा को सुलभ और सस्ती बनाना है।''

प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में पिछले दस सालों में लोगों के स्वास्थ्य में सुधार की दिशा में कई पहलें की गई हैं। 'आयुष्मान भारत' देश में स्वास्थ्य देखभाल पहुँच में क्रांतिकारी बदलाव लाने का एक कारगर प्रयास है। इस योजना के साथ पूरे देश में 30 हजार अस्पतालों का नेटवर्क जुड़ चुका है। 12.37 करोड़ परिवारों को इस योजना से लाभ मिल रहा है और 35 करोड़ कार्ड जारी हो चुके हैं। आने वाले समय में अस्पतालों की संख्या में बढ़ोतरी के साथ–साथ पैकेज रेट्स भी रिवाइज होंगे। हाल ही में केंद्र सरकार ने 70 वर्ष या इससे ज्यादा उम्र के सभी बुजुर्गों को भी आयुष्मान योजना में लाने का अहम निर्णय लिया है।

इस योजना के तहत 1.5 लाख स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं। इसके साथ ही, देश भर में मेडिकल कॉलेजों का नेटवर्क भी तेजी से विकसित किया जा रहा है। स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार ने अगले पांच वर्षों में 75,000 नई मेडिकल सीटें सृजित करने का अहम निर्णय लिया है।

आज जन–औषधि केंद्रों में, ब्रांडेड दवाओं की तुलना में 50% से 90% तक सस्ती दवाएं मिल रही हैं। जो आम आदमी के लिए फायदेमंद है, सस्ती दवाइयों और चिकित्सा सुविधाओं के माध्यम से गरीबों की मदद हो रही है। जिससे उनकी आर्थिक चिंताएं भी कम हुई हैं।

कोविड महामारी ने दुनिया को कई सच्चाइयों की याद दिला दी। इसने हमें दिखाया कि गहराई से जुड़ी दुनिया में, सीमाएं स्वास्थ्य से जुड़े खतरों को रोक नहीं सकती हैं। हमारा लक्ष्य सभी का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण है। भारत ने कोविड महामारी के दौरान 30 करोड़ से ज्यादा वैक्सीन डोज 100 से ज्यादा देशों में मदद के लिए पहुंचाई हैं। यह हमारी क्षमता और प्रतिबद्धता को दिखाता है।

भारत की पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में तनाव और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों के लिए कई समाधान मौजूद हैं। भारत न केवल स्वास्थ्य अवसंरचना का विस्तार कर रहा है बल्कि पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को भी बढ़ावा दे रहा है। हमें स्वस्थ रहने के लिए योग को दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा, मोटे अनाज (श्री अन्न) जैसे पोषक अनाज को अपने दैनिक आहार का हिस्सा बनाना होगा, जो स्वस्थ जीवन शैली के लिए बहुत आवश्यक हैं।

स्वास्थ्य और पर्यावरण आपस में जुड़े हुए हैं। हमें पर्यावरण और स्वास्थ्य के बीच गहरे संबंध को समझना होगा। साफ

हवा, स्वच्छ पानी और पोषणयुक्त आहार सुरक्षित आश्रय अच्छे स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य हैं। मेरा मानना है कि देश की प्रगति के लिए अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है।

मुझे बताया गया कि एम्स, ऋषिकेश की निदेशक प्रो0 मीनू सिंह के निर्देशन में चल रहे फैमिली मेडिसिन एवं सोशल आउटरीच सेल के द्वारा उत्तराखण्ड के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में अभी तक 1.5 लाख से अधिक मरीजों को डोरस्टेप केयर दे चुके हैं।

इसके अलावा सोशल आउटरीच सेल एम्स, ऋषिकेश के द्वारा लगभग 18 गोद लिए गांवों तथा मलिन बस्तियों में जहां विभिन्न मॉडल के जरिए स्वास्थ्य सेवाएं दी जा रही हैं, जिसमें युवाओं में नशा तथा मानसिक अवसाद से लड़ने के लिए 'युवा जोश' यूथ वेलनेस कार्यक्रम चलाया जा रहा है तथा गांव एवं मलिन बस्तियों में कम्युनिटी वेलनेस कार्यक्रम एवं सुदूरवर्ती क्षेत्रों में टेलीमेडिसिन एवं ड्रोन के जरिए सुविधाएं दी जा रही हैं।

एडवांस रोबोटिक सर्जरी से गांव के अंतिम छोर के अंतिम व्यक्ति तक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार एम्स, ऋषिकेश द्वारा निरंतर जारी है। इसके लिए मैं प्रो0 मीनू सिंह को इस उपलब्धि के लिए बधाई देता हूँ।

चिकित्सक सी.एच.सी, पी.एच.सी, सुदूर क्षेत्रों में क्यों नहीं जाना चाहते? हमारे गांव क्यों खाली हो रहे हैं? भारत देश की अधिकांश जनसंख्या गांवों में निवास करती है वहां की चिकित्सा व्यवस्था बिना चिकित्सक के कैसे चलेगी? यह सब चिंतन और मंथन का विषय है और इसके समाधान के लिए भरसक प्रयास किए जाने होंगे।

स्वास्थ्य सेवा सुदृढ़ हो, इसकी तो चर्चा आवश्यक है लेकिन स्वास्थ्य कर्मियों की सुरक्षा एवं उनकी प्राथमिकता भी सुनिश्चित हो इसके बारे में भी मंथन की नितांत आवश्यकता है।

हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का 'विकसित भारत 2047' का सपना साकार होने में फैमिली मेडिसिन एंड प्राइमरी केयर की बहुत बड़ी भूमिका है। मेरा मानना है कि स्वच्छ, स्वस्थ व जागरूक समाज ही विकसित भारत का स्वप्न साकार कर सकता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत के सभी प्रदेशों से आए हुए समस्त युवा चिकित्सक कर्मनिष्ठा के साथ जनहित में अपना कार्य करेंगे तथा समाज एवं परिवार के मध्य सेवाएं स्थापित कर उनकी संवेदना को समझते हुए भारत में चिकित्सा परिवेश में एक नया आयाम प्रतिष्ठित करेंगे। जनमानस के लिए चिकित्सा सहज और सरल हो, स्वस्थ समाज और देश का संकल्प लेते हुए ही आप यहां से जाएंगे, मैं आपसे आग्रह करता हूँ।

आइए! आज हम अपने जीवन में स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने का संकल्प लें। सभी खुश रहें, सभी स्वस्थ रहें, सभी अच्छा देखें और किसी को कष्ट न हो। सभी के स्वस्थ एवं सुखी जीवन की कामना करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

जय हिन्द!